14. दोहे

का बरषा जब कृषि सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने।।

तुलसी इह संसार में भाँति-भाँति के लोग।
सबसों हिल-मिल चलिए, नदी-नाव संजोग।।

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

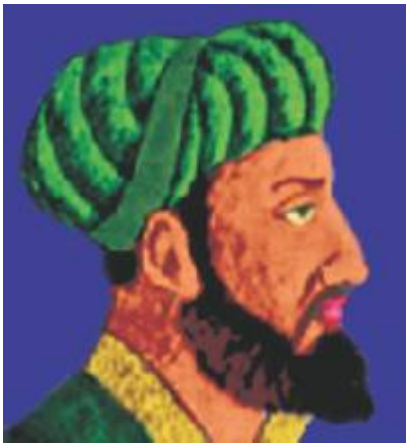

रहिमन विपदा हूँ भली, जो थोड़े दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।

बड़े बड़ाई न करे, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाई।
रहिमन सींचे मूल को, फुलई फलई अघाइ।।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।।

करत-करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

– तुलसी, रहीम, कबीर

शब्दार्थ		
सरिस	–	समान, बराबर
सम	–	समान, बराबर
अधमाई	–	पाप
बिपदा	–	संकट, मुसीबत
अघाना	–	पेट भर खाना
साधना	–	अभ्यास करना, प्रयास करना
जड़मति	–	मूर्ख
सुजान	–	चतुर
सिल	–	पत्थर
संजोग	–	मेल

बातचीत के लिए

1. आप संकट में सहायता के लिए किनके-किनके पास जाते हैं?
2. कोई काम आपको अच्छी तरह आ जाए इसके लिए आप क्या करते हैं?
3. एक साथ कई काम करने पर काम सही ढंग से नहीं हो पाता है। काम सही हो इसके लिए क्या करना चाहिए?
4. हमारा सच्चा मित्र या शुभचिंतक कौन है, इसका पता कब चलता है?
5. किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपने समय पर काम नहीं किया और आपको नुकसान हुआ हो।

पाठ में से

1. वर्षा के बहुत ज्यादा या कम होने से क्या-क्या नुकसान होता है?
2. किसे सबसे अच्छा कार्य कहा गया है?
3. विपत्ति से हमें क्या पता चलता है?

आपकी समझ से

1. **आप अपने इन मित्रों को कौन-सा दोहा सुनाकर समझाएँगे-**

   (क) जो झगड़ते रहते हैं।

   (ख) जो अपनी बड़ाई खुद करते हैं।

(ग) जो घमंड करते हैं।

2. पाठ के अनुसार सूची बनाइए –

(क) जो काम हमें करने चाहिए।

(ख) जो काम हमें नहीं करने चाहिए।

3. 'दोहावली' पाठ में तुलसी, रहीम और कबीर के तीन-तीन दोहे दिए गए हैं। इनमें से रहीम के दोहे पहचानकर लिखिए। यह भी बताइए कि आपने इन्हें कैसे पहचाना।

भाषा के नियम

1. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द के विपरीत अर्थ वाले शब्द से वाक्य को पूरा कीजिए –

(क) हमें न तो बहुत <u>अधिक</u> बोलना चाहिए न ही बहुत ----------।

(ख) हम सबको <u>दोस्त</u> बनाएँ न कि ----------।

(ग) विपत्ति में <u>अपने</u> और ---------- की पहचान हो जाती है।

(घ) हमें एक समय में <u>एक</u> ही काम पर ध्यान देना चाहिए न कि ---------- कामों पर।

(ङ) बार-बार अभ्यास करने से <u>मूर्ख</u> भी ---------- बन सकता है।

(च) दूसरों को कष्ट पहुँचाना <u>पाप</u> है जबकि दूसरों की सहायता करना ----------।

2. दिए गए शब्दों का वाक्यो में प्रयोग कीजिए –

- संसार – ----------
- पछताना – ----------
- विपत्ति – ----------
- अभ्यास – ----------

3. नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द लिखिए –

- बरषा – ----------
- जड़मति – ----------
- सरिस – ----------
- रसरी – ----------
- अधमाई – ----------
- पंछी – ----------

शब्दों की दुनिया

1. नीचे कृषि और वर्षा से जुड़े शब्दों को लिखें–

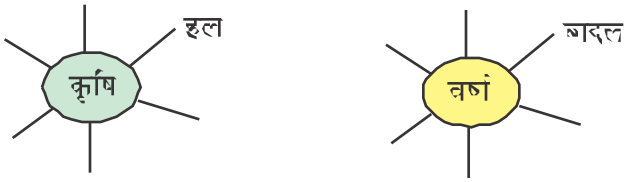

यह भी बताइए कि क्या कृषि और वर्षा में कोई जुड़ाव हो सकता है? कैसे ?

2. **नीचे दिए गए शब्दों से दो-दो नए शब्द बनाइए –**

- हित – ....
- बड़ा – ....
- सम – ....

कुछ करने के लिए

1. पाठ में दिए गए दोहों के अलावा कुछ दोहे ढूँढ़िए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

आपकी कल्पना

1. चित्र में आदमी ने क्या कहा होगा?

15. चिट्ठी आई है

भगवानपुरहार
08/11/11

प्रिय सहेली बेबी,
नमस्ते ।

आज तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम बिहार में होने वाले छठ पर्व के बारे में जानना चाहती हो।

कैसे ?

हमारे बिहार में छठ पर्व का बड़ा ही महत्व है। यहाँ गाँव या शहर हर क्षेत्र में छठ व्रत धूम-धाम से मनाया जाता है। यह व्रत कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाता है। लगभग हर घर में छठ पूजा की जाती है। लोग कई तरह की मन्नतें छठी मइया से माँगते हैं तथा पूरी होने पर व्रत रखते हैं।

कार्तिक महीने के प्रारंभ से ही लोग इस पावन पर्व की तैयारियों में लग जाते हैं। इस अवसर पर लोग घरों एवं गलियों की सफ़ाई करते हैं। घाटों एवं घाट तक जाने वाले रास्ते की भी साफ़-सफ़ाई की जाती है। चारों ओर छठ के गीत सुनाई देने लगते हैं। लगभग सभी परदेशी गाँव आ जाते हैं। यह व्रत चार दिनों तक चलता है, जिसमें सभी वर्ग के स्त्री-पुरुष व्रत रखते हैं। इस व्रत में जात-पात का भेद-भाव बिल्कुल नहीं रह जाता है।

में सुनाइए ।

यह व्रत नहाय-खाय से प्रारंभ होता है। नहाय-खाय के दूसरे दिन खरना होता है। इस दिन व्रती दिनभर उपवास रखने के बाद रात्रि में रोटी और खीर से खरना करते हैं तथा प्रसाद बाँटते हैं। फिर षष्ठी के दिन लोग नहा-धोकर नए कपड़े पहन छठ करने के लिए घाट पर जाते हैं। यहाँ व्रती नदी या तालाब के तट पर डूबते हुए सूर्य को फल तथा पकवान से अर्घ देकर पूजन करते हैं।

वापस घर आकर शाम को आँगन में ईख तथा ठेकुआ से कोसी भर कर छठ का गीत गाकर आरती करते हैं।

सुबह
हैं। यह अर्ध
ग्रहण करते
इस प्र
छठ पर्व की
ज़रूर करना
तुम्हार

हर्षोल
अर्घ
अर्घ्य
षष्ठी
पारण
व्रती
प्रयास